नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थपित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

आज हिंदी विवि में फूड फेस्टीवल का भव्य आयोजन

कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल करेंगे उद्घाटन

वर्धा, 22 जनवरी , 2020; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित 'एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' के तहत संचालित छात्र अंतरण कार्यक्रम के अंतर्गत समता भवन के प्रांगण में भव्य जेवण उत्सव (फूड फेस्टिवल) का आयोजन किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल करेंगे फेस्टिवल का उद्घाटन करेंगे। फेस्टीवल में आप पा सकेंगे देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद। तकरीबन 40 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों का स्वाद यहां लिया जा सकता है। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर चिप्स तक, बर्गर, पिज्जा, डोनेट, मोमो, कॉफी, बंगाली रसगुल्ला, पूरण पोळी, दाबेली, पनीर जंगली, छोले टिक्की, पुलाव, पावभाजी, चाउमिन, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, मटका रोटी, सैंडविच, नूडल्स, मंचूरियन, स्वीटकोर्न, चटपटे चाट आदि और खाना की पूरी थाली प्राप्त कर सकते हैं। फेस्टिवल की खासियत है कि इसमें आप वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 197 देशों के करेंसी नोट व सिक्कों को देख सकेंगे साथ ही नारायण देशमुख, राजेन्द्र भोयर और सच्चिदानंद जोशी के अनूठे संग्रहों को आप देख सकेंगे।

फूड फेस्टिवल के सह-संयोजक डॉ.अमित विश्वास ने बताया कि उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? हम इतालवी पिज्जे का दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाता हो लेकिन चाइनीज चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो अगला पायदान यकीनन स्वाद ही है।

स्वादिष्ट व्यंजन बनाने वाले स्टॉलधारकों को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' के नोडल अधिकारी डॉ. सुशील कुमार त्रिपाठी तथा फूड फेस्टिवल के संयोजक डॉ. के. बालराजू, सह-संयोजक डॉ. अमित विश्वास, जनसंपर्क अधिकारी श्री बी.एस.मिरगे ने वर्धा वासियों से का फूड फेस्टिवल का आनंद उठाने की अपील की है।